अध्याय १५

महाप्रभु की पौगण्ड-लीलाएँ

पन्द्रहवें अध्याय का सारांश इस प्रकार है। महाप्रभु ने गंगादास पण्डित के यहाँ व्याकरण की शिक्षा प्राप्त की और वे व्याकरण की टीका लिखने में अत्यन्त दक्ष बन गये। उन्होंने अपनी माता को बिना अन्न खाए एकादशी का व्रत रखने को कहा। उन्होंने एक कहानी सुनाई कि संन्यास लेने के बाद विश्वरूप ने स्वप्न में उन्हें भी संन्यास ग्रहण करने के लिए कहा, किन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया अत: उन्हें घर वापस भेज दिया गया। जगन्नाथ मिश्र के देहान्त के बाद उन्होंने वल्लभाचार्य की पुत्री लक्ष्मी से विवाह कर लिया। ये सभी घटनाएँ इस अध्याय में संक्षिप्त रूप से वर्णित हैं।

কু-মনাঃ সু-মনস্ত্বং হি যাতি যস্য পদাব্জয়োঃ ।
সু-মনোঽর্পণ-মাত্রেণ তং চৈতন্য-প্রভুং ভজে ॥১॥

कु-मना: सु-मनस्त्वं हि य्राति य्रस्य पदाब्जयो: ।
सु-मनोऽर्पण-मात्रेण तं चैतन्य-प्रभुं भजे ॥ १ ॥

कु-मना:—भौतिक इन्द्रिय सुख के कार्यकलापों में रूचि रखने वाला; **सु-मनस्त्वम्**—भौतिक इच्छाओं से रहित भक्त की स्थिति; **हि**—निश्चित रूप से; **य्राति**—पाता है; **य्रस्य**—जिसके; **पद-अब्जयो:**—चरणकमलों पर; **सु-मन:**—एक पुष्प; **अर्पण**—अर्पण; **मात्रेण**—मात्र ऐसा करने से; **तम्**—उनको; **चैतन्य-प्रभुम्**—चैतन्य महाप्रभु; **भजे**—मैं पूजा करता हूँ।

अनुवाद

मैं श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में सादर नमस्कार करता हूँ,

क्योंकि उनके चरणकमलों पर फूल चढ़ाने मात्र से ही बड़े से बड़ा भौतिकतावादी भी भक्त बन जाता है।

জয় জয় শ্রী-চৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।
জয়াদ্বৈতচন্দ্র, জয় গৌর-ভক্ত-বৃন্দ ॥২॥

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैतचन्द्र, जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २ ॥

जय जय—जय जय; **श्री-चैतन्य**—भगवान् चैतन्य महाप्रभु; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु; **जय-अद्वैतचन्द्र**—अद्वैत आचार्य की जय हो; **जय गौर-भक्त-वृन्द**—चैतन्य महाप्रभु के भक्तों की जय हो।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैत आचार्य की जय हो तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों की जय हो!

পৌগণ্ড-লীলার সূত্র করিয়ে গণন ।
পৌগণ্ড-বয়সে প্রভুর মুখ্য অধ্যয়ন ॥৩॥

पौगण्ड-लीलार सूत्र करिये गणन ।
पौगण्ड-वयसे प्रभुर मुख्य अध्ययन ॥ ३ ॥

पौगण्ड—पौगण्ड अवस्था, पाँच से दस साल के बीच की अवस्था; **लीलार**—लीलाओं की; **सूत्र**—रूपरेखा; **करिये**—मैं करता हूँ; **गणन**—गिनती; **पौगण्ड-वयसे**—पौगण्ड अवस्था में; **प्रभुर**—महाप्रभु के; **मुख्य**—मुख्य; **अध्ययन**—अध्ययन।

अनुवाद

अब मैं चैतन्य महाप्रभु की पाँच वर्ष की आयु से लेकर दस वर्ष की आयु तक की लीलाओं का संक्षिप्त वर्णन करने जा रहा हूँ। इस अवधि में उन्होंने मुख्य रूप से अध्ययन का कार्य किया।

পৌগণ্ড-লীলা চৈতন্য-কৃষ্ণস্যাতি-সুবিস্তৃতা ।
বিদ্যারম্ভ-মুখা পাণি-গ্রহণান্তা মনো-হরা ॥৪॥

पौगण्ड-लीला चैतन्य-कृष्णस्याति-सुविस्तृता ।
विद्यारम्भ-मुखा पाणि-ग्रहणान्ता मनो-हरा ॥ ४॥

पौगण्ड-लीला—पौगण्ड अवस्था की लीलाएँ; **चैतन्य-कृष्णस्य**—चैतन्य महाप्रभु की, जो स्वयं कृष्ण हैं; **अति-सुविस्तृता**—अत्यन्त विस्तृत; **विद्या-आरम्भ**—शिक्षा का आरम्भ; **मुखा**—मुख्य कार्य; **पाणि-ग्रहण**—विवाह; **अन्ता**—अन्त में; **मनः-हरा**—अत्यन्त सुन्दर।

अनुवाद

पौगण्ड अवस्था के अन्तर्गत महाप्रभु की लीलाएँ अत्यन्त व्यापक रहीं। उनका मुख्य कार्य उनकी शिक्षा ही रहा और उसके बाद उनका अन्यन्त सुन्दर ढंग से विवाह हुआ।

গঙ্গাদাস পণ্ডিত-স্থানে পড়েন ব্যাকরণ ।
শ্রবণ-মাত্রে কণ্ঠে কৈল সূত্র-বৃত্তি-গণ ॥ ৫॥

गङ्गादास पण्डित-स्थाने पड़ेन व्याकरण ।
श्रवण-मात्रे कण्ठे कैल सूत्र-वृत्ति-गण ॥ ५॥

गङ्गादास—गंगादास; **पण्डित-स्थाने**—शिक्षक के स्थान पर; **पड़ेन**—अध्ययन करते; **व्याकरण**—व्याकरण; **श्रवण-मात्रे**—श्रवण मात्र से; **कण्ठे**—गले और हृदय में; **कैल**—किया; **सूत्र-वृत्ति-गण**—सूत्रों तथा उनकी परिभाषाएँ।

अनुवाद

जब महाप्रभु श्री गंगादास पण्डित के यहाँ व्याकरण पढ़ रहे थे, तो वे व्याकरण के सारे नियम एवं परिभाषाएँ एक बार सुनकर ही तुरन्त कण्ठस्थ कर लेते थे।

तात्पर्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर का कहना है कि विष्णु तथा सुदर्शन नामक दो शिक्षकों से महाप्रभु पढ़ते थे। बाद में जब वे कुछ बड़े हुए, तब गंगादास पण्डित के संरक्षण में रहे, जिन्होंने उन्हें उच्चतर स्तर के व्याकरण की शिक्षा दी। संस्कृत भाषा का ठीक से अध्ययन करने वालों को सर्वप्रथम व्याकरण पढ़नी पड़ती है। कहा जाता है कि संस्कृत-व्याकरण को ही पूरा करने में कम-से-कम १२ वर्ष लगते हैं, किन्तु एक बार व्याकरण के नियम अच्छी तरह सीख जाने पर संस्कृत में लिखित अन्य सभी शास्त्रों या विषयों को समझना

अत्यन्त आसान हो जाता है, क्योंकि संस्कृत में व्याकरण ही शिक्षा का प्रवेश-द्वार है।

অল্প-কালে হৈলা পঞ্জী-টীকাতে প্রবীণ ।
চির-কালের পড়ুয়া জিনে হইয়া নবীন ॥৬॥

अल्प-काले हैला पञ्जी-टीकाते प्रवीण ।
चिर-कालेर पडुया जिने हइया नवीन ॥ ६ ॥

अल्प-काले—बहुत थोड़े समय में; **हैला**—हो गये; **पञ्जी-टीकाते**—व्याकरण की पंजी टीका नामक टीका में; **प्रवीण**—बहुत दक्ष; **चिर-कालेर**—अन्य सभी बड़ों में; **पडुया**—विद्यार्थी; **जिने**—विजय पाते; **हइया**—होकर; **नवीन**—उनसे कनिष्ठ।

अनुवाद

वे शीघ्र ही पञ्जी-टीका की व्याख्या करने में दक्ष हो गये, जिससे नये होने पर भी समस्त विद्यार्थियों में वे सबसे आगे हो गये।

तात्पर्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर का कहना है कि *पञ्जी-टीका* नामक व्याकरण पर एक भाष्य था, बाद में जिसकी विशद व्याख्या श्री चैतन्य महाप्रभु ने की।

অধ্যয়ন-লীলা প্রভুর দাস-বৃন্দাবন ।
'চৈতন্য-মঙ্গলে' কৈল বিস্তারি বর্ণন ॥৭॥

अध्ययन-लीला प्रभुर दास-वृन्दावन ।
'चैतन्य-मङ्गले' कैल विस्तारि वर्णन ॥ ७ ॥

अध्ययन-लीला—अध्ययन लीलाएँ; **प्रभुर**—महाप्रभु की; **दास-वृन्दावन**—वृन्दावन दास ठाकुर; **चैतन्य-मङ्गले**—अपनी पुस्तक *चैतन्य मंगल* में; **कैल**—किया है; **विस्तारि**—विस्तार से; **वर्णन**—वर्णन।

अनुवाद

श्रील वृन्दावन दास ठाकुर ने अपनी पुस्तक चैतन्य-मंगल (बाद में इसका नाम चैतन्य-भागवत पड़ा) में महाप्रभु की अध्ययन-लीला का बड़े विस्तार से वर्णन किया है।

तात्पर्य

चैतन्य-भागवत आदि खण्ड के अध्याय ४, ६, ७, ८, ९ तथा १० भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु की अध्ययन-लीला के लिए सुलभ्य सन्दर्भ का काम करते हैं।

এক দিন মাতার পদে করিয়া প্রণাম ।
প্রভু কহে,—মাতা, মোরে দেহ এক দান ॥ ৮॥

एक दिन मातार पदे करिया प्रणाम ।
प्रभु कहे,—माता, मोरे देह एक दान ॥ ८ ॥

एक दिन—एक दिन; **मातार**—माता के; **पदे**—चरणों पर; **करिया**—करके; **प्रणाम**—प्रणाम; **प्रभु**—महाप्रभु; **कहे**—ने कहा; **माता**—प्रिय माता; **मोरे**—मुझे; **देह**—दो; **एक**—एक; **दान**—उपहार।

अनुवाद

एक दिन श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपनी माता के चरणकमलों पर गिरकर उनसे प्रार्थना की कि वे उन्हें एक वस्तु का दान दें।

মাতা বলে,—তাই দিব, যা তুমি মাগিবে ।
প্রভু কহে,—একাদশীতে অন্ন না খাইবে ॥ ৯॥

माता बले,—ताइ दिब, य़ा तुमि मागिबे ।
प्रभु कहे,—एकादशीते अन्न ना खाइबे ॥ ९ ॥

माता बले—उनकी माता बोली; **ताइ दिब**—मैं तुम्हें वह दूंगी; **य़ा**—जो कुछ; **तुमि**—तुम; **मागिबे**—माँगोगे; **प्रभु कहे**—महाप्रभु ने कहा; **एकादशीते**—एकादशी के दिन; **अन्न**—अन्न; **ना**—न; **खाइबे**—खाओ।

अनुवाद

उनकी माता ने कहा "मेरे प्रिय पुत्र, जो तुम माँगोगे वही मैं दूंगी।" तब महाप्रभु बोले, "प्रिय माता, कृपया आप एकादशी के दिन अन्न न खायें।"

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने बाल्यकाल से ही एकादशी के दिन उपवास

रखने की प्रथा अपना ली। श्रील जीव गोस्वामी कृत *भक्ति-सन्दर्भ* में *स्कन्द-पुराण* से एक उद्धरण आया है, जिसमें यह बतलाया गया है कि जो एकादशी के दिन अन्न खाता है, वह अपने माता, पिता, भाई तथा गुरु का हत्यारा बनता है और वैकुण्ठ-लोक प्राप्त होने पर भी वह नीचे गिर जाता है। एकादशी के दिन हर वस्तु, जिसमें अन्न तथा दाल सम्मिलित हैं, विष्णु के लिए बनाई जाती है, किन्तु वैष्णवों के लिए आदेश है कि वे एकादशी के दिन विष्णु-प्रसाद भी न लें। कहा जाता है कि वैष्णव भगवान् विष्णु को अर्पित किये बिना कोई खाद्य ग्रहण नहीं करते, किन्तु एकादशी के दिन वैष्णवों को विष्णु को अर्पित महाप्रसाद तक छूना वर्जित है, यद्यपि ऐसा प्रसाद दूसरे दिन ग्रहण करने के लिए रखा जा सकता है। एकादशी के दिन कोई भी अन्न ग्रहण करना मना है, भले ही वह भगवान् विष्णु को अर्पित क्यों न किया गया हो।

শচী কহে,—না খাইব, ভাল-ই কহিলা ।
সেই হৈতে একাদশী করিতে লাগিলা ॥ ১০॥

शची कहे,—ना खाइब, भाल-इ कहिला ।
सेइ हैते एकादशी करिते लागिला ॥ १०॥

शची कहे—माता शची ने कहा; **ना खाइब**—मैं नहीं खाऊँगी; **भाल-इ कहिला**—तुमने बहुत सुन्दर बात कही है; **सेइ हैते**—उस दिन के; **एकादशी**—एकादशी के दिन; **करिते लागिला**—उपवास करने लगी।

अनुवाद

माता शची ने कहा, "तुमने बहुत अच्छा कहा। मैं एकादशी के दिन अन्न नहीं खाऊँगी।" उस दिन से वे एकादशी के दिन उपवास रखने लगीं।

तात्पर्य

स्मार्त ब्राह्मण इस पक्ष के हैं कि विधवा को तो एकादशी व्रत रखना चाहिए, किन्तु सधवा को नहीं। ऐसा लगता है कि चैतन्य महाप्रभु के अनुरोध के पूर्व शचीमाता एकादशी व्रत नहीं रखती थीं, क्योंकि वे सधवा थीं। किन्तु चैतन्य महाप्रभु ने ऐसी प्रथा का सूत्रपात किया कि विधवा न होने पर भी स्त्री को एकादशी व्रत रखना चाहिए और उस दिन कोई अन्न नहीं छूना चाहिए, भले ही वह विष्णु को अर्पित प्रसाद ही क्यों न हो।

তবে মিশ্র বিশ্বরূপের দেখিয়া যৌবন ।
কন্যা চাহি' বিবাহ দিতে করিলেন মন ॥১১॥

तबे मिश्र विश्वरूपेर देखिया यौवन ।
कन्या चाहि' विवाह दिते करिलेन मन ॥ ११ ॥

तबे—तत्पश्चात्; **मिश्र**—जगन्नाथ मिश्र; **विश्वरूपेर**—बड़े पुत्र विश्वरूप का; **देखिया**—देखकर; **यौवन**—यौवन; **कन्या चाहि'**—एक कन्या ढूंढनी चाही; **विवाह**—विवाह; **दिते**—करने के लिए; **करिलेन**—बनाया; **मन**—अपना मन।

अनुवाद

तत्पश्चात् विश्वरूप को युवक हुआ देखकर जगन्नाथ मिश्र ने कोई कन्या ढूँढकर उसका विवाह कर देना चाहा।

বিশ্বরূপ শুনি' ঘর ছাড়ি পলাইলা ।
সন্ন্যাস করিয়া তীর্থ করিবারে গেলা ॥১২॥

विश्वरूप शुनि' घर छाड़ि पलाइला ।
सन्न्यास करिया तीर्थ करिबारे गेला ॥ १२ ॥

विश्वरूप—विश्वरूप; **शुनि'**—यह सुनकर; **घर**—घर; **छाड़ि**—त्यागकर; **पलाइला**—चले गये; **सन्न्यास**—संन्यास; **करिया**—स्वीकार करके; **तीर्थ**—तीर्थ स्थान; **करिबारे**—यात्रा करने के लिए; **गेला**—चले गये।

अनुवाद

यह सुनकर विश्वरूप ने तुरन्त गृहत्याग कर दिया और वे संन्यास लेकर एक तीर्थस्थान से दूसरे तीर्थस्थान की यात्रा करने निकल गये।

শুনি, শচী-মিশ্রের দুঃখী হৈল মন ।
তবে প্রভু মাতা-পিতার কৈল আশ্বাসন ॥১৩॥

शुनि, शची-मिश्रेर दुःखी हैल मन ।
तबे प्रभु माता-पितार कैल आश्वासन ॥ १३ ॥

शुनि'—यह सुनकर; **शची**—माता शची; **मिश्रेर**—और जगन्नाथ मिश्र के; **दुःखी**—अत्यन्त दुःखी; **हैल**—हो गये; **मन**—मन; **तबे**—उस समय; **प्रभु**—भगवान् चैतन्य महाप्रभु; **माता-पितार**—माता पिता को; **कैल**—किया; **आश्वासन**—आश्वासन।

अनुवाद

जब शचीमाता तथा जगन्नाथ मिश्र ने अपने ज्येष्ठ पुत्र विश्वरूप के चले जाने का समाचार सुना, तो वे अत्यन्त दुःखी हुए, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें ढाढ़स बँधाने का प्रयास किया।

ভাল হৈল,—বিশ্বরূপ সন্ন্যাস করিল ।
পিতৃ-কুল, মাতৃ-কুল,—দুই উদ্ধারিল ॥ ১৪॥

भाल हैल,—विश्वरूप सन्न्यास करिल ।
पितृ-कुल, मातृ-कुल,—दुइ उद्धारिल ॥ १४॥

भाल हैल—यह बहुत अच्छा है; **विश्वरूप**—विश्वरूप; **सन्न्यास**—संन्यास; **करिल**—स्वीकार किया है; **पितृ-कुल**—पिता का वंश; **मातृ-कुल**—माता का वंश; **दुइ**—उन दोनों; **उद्धारिल**—उद्धार हुआ है।

अनुवाद

महाप्रभु ने कहा, "हे माता तथा पिता! यह अच्छा ही हुआ कि विश्वरूप ने संन्यास ग्रहण कर लिया है, क्योंकि इस तरह उसने अपने पितृ-कुल तथा अपने मातृ-कुल दोनों का ही उद्धार कर दिया है।"

तात्पर्य

कभी-कभी ऐसा कहा जाता है कि श्री चैतन्य महाप्रभु ने इस कलियुग में संन्यास ग्रहण करने के लिए अपनी स्वीकृति नहीं प्रदान की, क्योंकि शास्त्र में कहा गया है :

अश्वमेधं गवालम्भं संन्यासं पलपैतृकम्।
देवरेण सुतोत्पत्तिं कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

"इस कलियुग में पाँच प्रकार के कर्म वर्जित हैं : अश्वमेध-यज्ञ या गोमेध-यज्ञ जिनमें घोड़े या गाय की बलि दी जाती है, संन्यास ग्रहण करना, पूर्वजों को माँस की बलि देना और अपने भाई की पत्नी से बच्चे उत्पन्न करना।" (*ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्ण-जन्म खण्ड* १८५.१८०)

ऐसा होते हुए भी श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वयं संन्यास लिया और अपने ज्येष्ठ भाई विश्वरूप के संन्यास ग्रहण करने का समर्थन किया। यहाँ पर स्पष्ट कहा गया है— *भाल हैल—विश्वरूप संन्यास करिल पितृकुल-मातृ कुल—दुइ*

उद्धारिल। अतएव क्या ऐसा सोचा जा सकता है कि चैतन्य महाप्रभु ने परस्पर-विरोधी वक्तव्य दिये हैं? नहीं, उन्होंने ऐसा नहीं किया। ऐसी संस्तुति की जाती है कि भगवान् की सेवा करने के लिए जीवन समर्पित करने हेतु संन्यास ग्रहण करना चाहिए और हर व्यक्ति को ऐसा संन्यास लेना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से मनुष्य अपने मातृ कुल तथा पितृ कुल दोनों की सर्वश्रेष्ठ सेवा करता है। किन्तु मनुष्य को मायावाद-पंथ का संन्यास नहीं स्वीकार करना चाहिए, जिसका व्यावहारिक दृष्टि में कोई भी अर्थ नहीं निकलता। हम अनेक मायावादी संन्यासियों को मात्र सड़कों पर घूमते हुए और अपने आपको ब्रह्म या नारायण बताते हुए देखते हैं। वे सारा समय भीख माँगने में बिताते हैं, ताकि अपना भूखा पेट भर सकें। मायावादी संन्यासी इतने पतित हो चुके हैं कि उनका एक वर्ग कूकर-सूकर के समान सब कुछ खा जाता है। ऐसे ही गिरे हुए संन्यास की इस युग में मनाही है। वास्तव में, श्रील शंकराचार्य ने संन्यास ग्रहण करने के जो नियम बनाये थे, वे बहुत कठोर थे, किन्तु बाद में तथाकथित मायावादी संन्यासी अपने छद्म दर्शन के कारण पतित हो गये, क्योंकि इस दर्शन के अनुसार संन्यास ग्रहण करने से मनुष्य नारायण बन जाता है। श्री चैतन्य महाप्रभु ने इस प्रकार के संन्यास का बहिष्कार किया। किन्तु संन्यास ग्रहण करना वर्णाश्रम धर्म का अंग है। भला इसका बहिष्कार कैसे किया जा सकता है?

আমি ত' করিব তোমা' দুঁহার সেবন ।
শুনিয়া সন্তুষ্ট হৈল পিতা-মাতার মন ॥ ১৫ ॥

आमि त' करिब तोमा' दुँहार सेवन ।
शुनिया सन्तुष्ट हैल पिता-मातार मन ॥ १५ ॥

आमि त'—मैं; **करिब**—करूँगा; **तोमा**—आपके लिए; **दुँहार**—दोनों; **सेवन**—सेवा; **शुनिया**—सुनकर; **सन्तुष्ट**—सन्तुष्ट; **हैल**—हो गये; **पिता-मातार मन**—माता पिता के मन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने माता-पिता को आश्वासन दिया, "मैं आप दोनों की सेवा करूँगा।" इस तरह उनके माता-पिता के मन को सन्तोष हो गया।

এক-দিন নৈবেদ্য-তাম্বূল খাইয়া ।
ভূমিতে পড়িলা প্রভু অচেতন হঞা ॥১৬॥

एक-दिन नैवेद्य-ताम्बूल खाइया ।
भूमिते पड़िला प्रभु अचेतन हञा ॥ १६ ॥

एक-दिन—एक दिन; **नैवेद्य**—नैवेद्य; **ताम्बूल**—पान सुपारी; **खाइया**—खाकर; **भूमिते**—भूमि पर; **पड़िला**—गिर गये; **प्रभु**—प्रभु; **अचेतन**—अचेत; **हञा**—होकर।

अनुवाद

एक दिन श्री चैतन्य महाप्रभु ने अर्चाविग्रह पर चढ़ी पान-सुपारी खा ली, जिससे उन्हें नशा चढ़ गया और वे अचेत होकर जमीन पर गिर पड़े।

तात्पर्य

पान-सुपारी नशीली (मादक) होती है, इसलिए इसे खाने की मनाही है। पान-सुपारी खाने के बाद मूर्च्छित होने की महाप्रभु की लीला हमारे लिए उपदेश है कि हमें सुपारी नहीं खाना चाहिए, भले ही वह विष्णु को अर्पित ही क्यों न हो, वैसे ही जैसे एकादशी के दिन अन्न नहीं खाया जाता है। वस्तुत: चैतन्य महाप्रभु की मूर्छा का विशेष प्रयोजन यही था। पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् होने के कारण वे इच्छानुसार कुछ भी कर सकते हैं और कुछ भी खा सकते हैं, किन्तु हमें उनकी लीलाओं का अनुकरण नहीं करना चाहिए।

আস্তে-ব্যস্তে পিতা-মাতা মুখে দিল পানি ।
সুস্থ হঞা কহে প্রভু অপূর্ব কাহিনী ॥১৭॥

आस्ते-व्यस्ते पिता-माता मुखे दिल पानि ।
सुस्थ हञा कहे प्रभु अपूर्व काहिनी ॥ १७॥

आस्ते-व्यस्ते—हड़बड़ी में; **पिता-माता**—माता पिता; **मुखे**—मुख पर; **दिल**—दिया; **पानि**—पानी; **सुस्थ हञा**—होश में आकर; **कहे**—कहते हैं; **प्रभु**—महाप्रभु; **अपूर्व**—कुछ आश्चर्यजनक; **काहिनी**—बात।

अनुवाद

जब उनके माता-पिता ने हड़बड़ी में उनके मुँह पर पानी छिड़का, तो उन्हें होश आया और उन्होंने ऐसी आश्चर्यजनक बात सुनाई, जो उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी थी।

এথা হৈতে বিশ্বরূপ মোরে লঞা গেলা ।
সন্ন্যাস করহ তুমি, আমারে কহিলা ॥১৮॥

एथा हैते विश्वरूप मोरे लञा गेला ।
सन्न्यास करह तुमि, आमारे कहिला ॥ १८ ॥

एथा—यहाँ; **हैते**—से; **विश्वरूप**—विश्वरूप; **मोरे**—मुझे; **लञा**—अपने साथ ले; **गेला**—गये; **सन्न्यास**—संन्यास; **करह**—स्वीकार करो; **तुमि**—तुम भी; **अमारे**—मुझे; **कहिला**—उन्होंने कहा।

अनुवाद

महाप्रभु ने कहा, "विश्वरूप मुझे यहाँ से कहीं दूर ले गये और मुझसे बोले कि मैं भी संन्यास ग्रहण कर लूँ।

আমি কহি,—আমার অনাথ পিতা-মাতা ।
আমি বালক,—সন্ন্যাসের কিবা জানি কথা ॥১৯॥

आमि कहि,—आमार अनाथ पिता-माता ।
आमि बालक,—सन्न्यासेर किबा जानि कथा ॥ १९ ॥

आमि कहि—मैंने कहा; **आमार**—मेरे; **अनाथ**—अनाथ; **पिता-माता**—माता पिता; **आमि**—मैं हूँ; **बालक**—मात्र एक शिशु; **सन्न्यासेर**—संन्यास का; **किबा**—क्या; **जानि**—जानूँ; **कथा**—अर्थ।

अनुवाद

"मैंने विश्वरूप से कहा, 'मेरे माता-पिता असहाय हैं और मैं भी अभी बच्चा ही हूँ। मैं संन्यास के बारे में क्या जानूँ?

গৃহস্থ হইয়া করিব পিতা-মাতার সেবন ।
ইহাতে-ই তুষ্ট হবেন লক্ষ্মী-নারায়ণ ॥২০॥

गृहस्थ हइया करिब पिता-मातार सेवन ।
इहाते-इ तुष्ट हबेन लक्ष्मी-नारायण ॥ २० ॥

गृहस्थ—गृहस्थ; **हइया**—होकर; **करिब**—मैं करूँगा; **पिता-मातार**—माता पिता की; **सेवन**—सेवा; **इहाते-इ**—इसमें; **तुष्ट**—सन्तुष्ट; **हबेन**—होंगे; **लक्ष्मी-नारायण**—लक्ष्मी-नारायण।

अनुवाद

"'बाद में मैं गृहस्थ बनूँगा और इस तरह माता-पिता की सेवा करूँगा, क्योंकि इससे भगवान् नारायण तथा उनकी पत्नी लक्ष्मीदेवी अत्यधिक तुष्ट होंगी।'

তবে বিশ্বরূপ ইহাঁ পাঠাইল মোরে ।
মাতাকে কহিও কোটি কোটি নমস্কারে ॥২১॥

तबे विश्वरूप इहाँ पाठाइल मोरे ।
माताके कहिओ कोटि कोटि नमस्कारे ॥ २१ ॥

तबे—तब; **विश्वरूप**—विश्वरूप; **इहाँ**—यहाँ; **पाठाइल**—भेजा; **मोरे**—मुझे; **माताके कहिओ**—मेरी माता को बोलो; **कोटि कोटि**—हजारों; **नमस्कारे**—प्रणाम।

अनुवाद

"तभी विश्वरूप ने मुझे घर लौटा दिया और कहा, 'माता शची देवी से मेरा कोटि-कोटि नमस्कार कहना।'"

এই মত নানা লীলা করে গৌরহরি ।
কি কারণে লীলা,—ইহা বুঝিতে না পারি ॥২২॥

एइ मत नाना लीला करे गौरहरि ।
कि कारणे लीला,—इहा बुझिते ना पारि ॥ २२ ॥

एइ मत—इस प्रकार; **नाना**—विविध; **लीला**—लीलाएँ; **करे**—करते हैं; **गौरहरि**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कि कारणे**—क्या कारण है; **लीला**—लीलाएँ; **इहा**—यह; **बुझिते**—समझने के लिए; **ना**—नहीं; **पारि**—मैं सक्षम हूँ।

अनुवाद

इस प्रकार चैतन्य महाप्रभु ने अनेक लीलाएँ कीं, किन्तु उन्होंने ऐसा क्यों किया मैं समझ नहीं सकता।

तात्पर्य

पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् तथा उनके भक्त इस इस जगत् में आने पर अपने प्रयोजन को पूरे करते हैं। अतएव कभी-कभी वे इस तरह कार्य करते हैं, जिसे समझ पाना अत्यन्त मुश्किल होता है। इसीलिए कहा गया है—*वैष्णवेर क्रिया-*

मुद्रा विज्ञेह ना बुझय—भले ही कोई कितना विद्वान और बुद्धिमान क्यों न हो, वह वैष्णव के कार्यों को नहीं समझ सकता। वैष्णव अपने प्रयोजन की पूर्ति के लिए जो भी उपयुक्त होता है, स्वीकार कर लेता है। किन्तु मूर्ख लोग ऐसे उच्च वैष्णवों के प्रयोजन को न समझ पाने के कारण उनकी आलोचना करते हैं। यह वर्जित है। यह कोई नहीं जान सकता कि एक वैष्णव अपने प्रयोजन की पूर्ति के लिए क्या करता है, अतएव ऐसे वैष्णव की आलोचना करना एक अपराध है, जिसे *साधु-निन्दा* कहते है।

কত দিন রহি' মিশ্র গেলা পর-লোক ।
মাতা-পুত্র দুঁহার বাড়িল হৃদি শোক ॥২৩॥

कत दिन रहि' मिश्र गेला पर-लोक ।
माता-पुत्र दुँहार बाड़िल हृदि शोक ॥ २३ ॥

कत दिन—कुछ दिन; **रहि'**—रहने पर; **मिश्र**—जगन्नाथ मिश्र; **गेला**—गुजर गये; **पर-लोक**—दिव्य जगत् को; **माता**—माता; **पुत्र**—पुत्र; **दुँहार**—उन दोनों के; **बाड़िल**—बढ़ गया; **हृदि**—हृदय में; **शोक**—शोक।

अनुवाद

कुछ दिनों के बाद जगन्नाथ मिश्र इस संसार से दिव्य लोक को चले गये। इससे माता तथा पुत्र दोनों ही हृदय से अत्यन्त शोकाकुल हो गये।

বন্ধু-বান্ধব অসি' দুঁহা প্রবোধিল ।
পিতৃ-ক্রিয়া বিধি-মতে ঈশ্বর করিল ॥২৪॥

बन्धु-बान्धव असि' दुँहा प्रबोधिल ।
पितृ-क्रिया विधि-मते ईश्वर करिल ॥ २४ ॥

बन्धु—बन्धु; **बान्धव**—बान्धव; **आसि'**—वहाँ आये; **दुँहा**—दोनों; **प्रबोधिल**—सान्तवना दी; **पितृ-क्रिया**—पितृ क्रिया; **विधि-मते**—वैदिक प्रणाली के अनुसार; **ईश्वर**—ईश्वर; **करिल**—की।

अनुवाद

चैतन्य महाप्रभु तथा उनकी माता को धीरज बँधाने के लिए मित्रजन तथा सम्बन्धी लोग वहाँ आये। चैतन्य महाप्रभु, यद्यपि साक्षात् भगवान्

थे, तथापि उन्होंने वैदिक विधि से अपने मृत पिता का संस्कार सम्पन्न किया।

কত দিনে প্রভু চিত্তে করিলা চিন্তন ।
গৃহস্থ হইলাম, এবে চাহি গৃহ-ধর্ম ॥২৫॥

कत दिने प्रभु चित्ते करिला चिन्तन ।
गृहस्थ हइलाम, एबे चाहि गृह-धर्म ॥ २५ ॥

कत दिने—कुछ दिन के बाद; **प्रभु**—महाप्रभु; **चित्ते**—अपने मन में; **करिला**—किया; **चिन्तन**—विचार; **गृहस्थ हइलाम**—मैं गृहस्थ जीवन में हूँ; **एबे**—अब; **चाहि**—मैं चाहता हूँ; **गृह-धर्म**—गृहस्थ जीवन के कार्यकलाप।

अनुवाद

कुछ दिनों के बाद महाप्रभु ने सोचा, "मैंने संन्यास नहीं लिया और चूँकि मैं घर पर रहता हूँ, अतएव यह मेरा कर्तव्य है कि गृहस्थ की तरह कर्म करूँ।

গৃহিণী বিনা গৃহ-ধর্ম না হয় শোভন ।
এত চিন্তি' বিবাহ করিতে হৈল মন ॥২৬॥

गृहिणी विना गृह-धर्म ना हय शोभन ।
एत चिन्ति' विवाह करिते हैल मन ॥ २६ ॥

गृहिणी—गृहिणी; **विना**—बिना; **गृह-धर्म**—गृह धर्म; **ना**—नहीं; **हय**—देता; **शोभन**—शोभा; **एत चिन्ति'**—यह सोचकर; **विवाह**—विवाह; **करिते**—करने के लिए; **हैल**—हो गया; **मन**—मन।

अनुवाद

चैतन्य महाप्रभु ने विचार किया, "पत्नी बिना गृहस्थ जीवन का कोई अर्थ नहीं है।" इस तरह उन्होंने विवाह करने का निश्चय किया।

ন গৃহং গৃহমিত্যাহুর্গৃহিণী গৃহমুচ্যতে ।
তয়া হি সহিতঃ সর্বান্পুরুষার্থান্সমশ্নুতে ॥২৭॥

न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते ।
तया हि सहितः सर्वान्पुरुषार्थान्समश्नुते ॥ २७॥

न—नहीं; **गृहम्**—घर; **गृहम्**—घर; **इति**—इस प्रकार; **आहुः**—कहा; **गृहिणी**—गृहिणी; **गृहम्**—घर; **उच्यते**—कहा जाता है; **तया**—उसके; **हि**—निश्चित रूप से; **सहितः**—साथ; **सर्वान्**—सब; **पुरुष-अर्थान्**—मानव जीवन के उद्देश्य; **समश्नुते**—पूरे होते हैं।

अनुवाद

"घर-मात्र घर नहीं होता। यह तो पत्नी है, जो घर को सार्थक बनाती है। यदि कोई अपनी पत्नी के साथ घर में रहता है, तो वे दोनों मिलकर मनुष्य जीवन के समस्त हितों (पुरुषार्थों) को पूरा कर सकते हैं।"

দৈবে এক দিন প্রভু পড়িয়া আসিতে ।
বল্লভাচার্যের কন্যা দেখে গঙ্গা-পথে ॥২৮॥

दैवे एक दिन प्रभु पड़िया आसिते ।
वल्लभाचार्य्येर कन्या देखे गङ्गा-पथे ॥ २८॥

दैवे—दैव योग से; **एक दिन**—एक दिन; **प्रभु**—महाप्रभु; **पड़िया**—अध्ययन के बाद; **आसिते**—लौटते समय; **वल्लभाचार्य्येर**—वल्लभाचार्य की; **कन्या**—पुत्री; **देखे**—देखी; **गङ्गा-पथे**—गंगा जाती हुई।

अनुवाद

एक दिन जब महाप्रभु पाठशाला से वापस आ रहे थे, तब अचानक उन्होंने वल्लभाचार्य की पुत्री देखी, जो गंगाजी की ओर जा रही थी।

পূর্ব-সিদ্ধ ভাব দুঁহার উদয় করিল ।
দৈবে বনমালী ঘটক শচী-স্থানে আইল ॥২৯॥

पूर्व-सिद्ध भाव दुँहार उदय करिल ।
दैवे वनमाली घटक शची-स्थाने आइल ॥ २९॥

पूर्व-सिद्ध—जैसे पहले ही तय हो चुका था; **भाव**—भाव; **दुँहार**—दोनों के; **उदय**—जागृत; **करिल**—हो गये; **दैवे**—दैव योग से; **वनमाली**—वनमाली; **घटक**—विवाह निर्माता; **शची-स्थाने**—शचीमाता के स्थान पर; **आइल**—आया।

अनुवाद

महाप्रभु तथा लक्ष्मीदेवी के मिलने पर उनके सम्बन्ध जागृत हुए, जो पहले से तय हो चुके थे और संयोग से विवाह तय कराने वाला (घटक) वनमाली शचीमाता से मिलने आ गया।

तात्पर्य

वनमाली घटक नवद्वीप का रहने वाला ब्राह्मण था। उसने लक्ष्मीदेवी का विवाह महाप्रभु से तय कराया। पूर्वजन्म में वह विश्वामित्र था, जिसने भगवान् श्री रामचन्द्र का विवाह तय कराया था और बाद में इसी ब्राह्मण ने रुक्मिणी के साथ भगवान् कृष्ण का विवाह करवाया था। वही ब्राह्मण चैतन्य-लीला में महाप्रभु का विवाह पक्का करने वाला बना।

শচীর ইঙ্গিতে সম্বন্ধ করিল ঘটন ।
লক্ষ্মীকে বিবাহ কৈল শচীর নন্দন ॥৩০॥

शचीर इङ्गिते सम्बन्ध करिल घटन ।
लक्ष्मीके विवाह कैल शचीर नन्दन ॥ ३० ॥

शचीर इङ्गिते—माता शची के संकेत से; **सम्बन्ध**—रिश्ता; **करिल**—बन गया; **घटन**—सम्भव; **लक्ष्मीके**—लक्ष्मी देवी के साथ; **विवाह**—विवाह; **कैल**—हो गया; **शचीर नन्दन**—माता शची के पुत्र का।

अनुवाद

शचीदेवी का संकेत पाकर, वनमाली घटक ने विवाह पक्का करा दिया और इस प्रकार निर्धारित समय पर महाप्रभु ने लक्ष्मीदेवी के साथ विवाह कर लिया।

বিস্তারিয়া বর্ণিলা তাহা বৃন্দাবন-দাস ।
এই ত' পৌগণ্ড-লীলার সূত্র-প্রকাশ ॥৩১॥

विस्तारिया वर्णिला ताहा वृन्दावन-दास ।
एइ त' पौगण्ड-लीलार सूत्र-प्रकाश ॥ ३१ ॥

विस्तारिया—विस्तृत करके; **वर्णिला**—वर्णन किया है; **ताहा**—वह; **वृन्दावन-दास**—

ठाकुर वृन्दावन दास; **एइ त'**—यह है; **पौगण्ड-लीलार**—पौगाण्ड लीला का; **सूत्र-प्रकाश**—संक्षेप में वर्णन।

अनुवाद

वृन्दावन दास ठाकुर ने महाप्रभु की इन समस्त पौगण्ड-लीलाओं का विस्तार से वर्णन किया है। मैंने तो उन्हीं लीलाओं का केवल संक्षिप्त रूप प्रस्तुत किया है।

পৌগণ্ড বয়সে লীলা বহুত প্রকার ।
বৃন্দাবন-দাস ইহা করিয়াছেন বিস্তার ॥ ৩২॥

पौगण्ड वयसे लीला बहुत प्रकार ।
वृन्दावन-दास इहा करियाछेन विस्तार ॥ ३२ ॥

पौगण्ड वयसे—पौगण्ड अवस्था में; **लीला**—लीलाएँ; **बहुत प्रकार**—बहुत प्रकार की; **वृन्दावन-दास**—वृन्दावन दास ठाकुर; **इहा**—यह; **करियाछेन**—की है; **विस्तार**—विस्तृत व्याख्या।

अनुवाद

महाप्रभु ने अपनी पौगण्ड अवस्था में नाना प्रकार की लीलाएँ की हैं और श्रील वृन्दावन दास ठाकुर ने इन सबका विस्तार से वर्णन किया है।

অতএব দিঙ্মাত্র ইহাঁ দেখাইল ।
'চৈতন্য-মঙ্গলে' সর্ব-লোকে খ্যাত হৈল ॥ ৩৩॥

अतएव दिंमात्र इहाँ देखाइल ।
'चैतन्य-मङ्गले' सर्व-लोके ख्यात हैल ॥ ३३ ॥

अतएव—अतएव; **दिं-मात्र**—संकेत के लिए; **इहाँ**—यहाँ; **देखाइल**—मैंने दिखाया है; **चैतन्य-मङ्गले**—चैतन्य मंगल नाम की पुस्तक में; **सर्व-लोके**—विश्वभर में; **ख्यात**—प्रसिद्ध; **हैल**—हो गया।

अनुवाद

मैंने तो इन लीलाओं का संकेत-मात्र किया है, क्योंकि वृन्दावन दास ठाकुर ने अपनी पुस्तक चैतन्य-मंगल (अब चैतन्य-भागवत) में इन सबका विस्तार से वर्णन किया है।

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥৩৪॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे ग्नार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ ३४॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—चरणकमलों पर; **ग्नार**—जिनके; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक पुस्तक; **कहे**—वर्णन करता है; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए और सदैव उनकी कृपा की आकांक्षा करते हुए मैं कृष्णदास उन्हीं के चरणचिह्नों का अनुसरण करते हुए श्रीचैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत आदिलीला के पन्द्रहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ, जिसमें महाप्रभु की पौगण्ड-लीलाओं का वर्णन हुआ है ।